

स्थानी वाप बेठ स्थानी वच्चों को समझते हैं। तुम इस पाठशाला में ऐठ उच्च दर्जे पाते हैं और दिल में समझते हो हम वहुत ऊंच ते ऊंच स्वर्ग का पद पाने हैं। ऐसे वच्चों को तो वहुत छूटी होनी चाहें। अगर सभी को यह निश्चय है तो। सभी रक जैसे तो होते हो नहीं हैं। पर्सी फैलाने नम्बर तक होते हैं। ऐसर में भी फॉर्ट से लास्ट तक नम्बर होते हैं। कोई फैल मी होते हैं तो कोइ पास मी होते हैं। तो इरेक अपने दिन से पूछे वादा जो हमको इतना ऊंच बनाते हैं मैं कहां तक लायक बना हूँ। फ्लाने से अक्षा हूँ वा क्या। पढ़ाई है ना। देखने में भी आता है जो कोई पैपर में कमज़ोर होते होते नीचे चले जाते हैं। भल शैनेटर होगा तो मा कम सवेस्ट में होगा तो यीचे चला जाएगा। विरला कोई स्कालरशिप लेते हैं। यहभी स्कूल है। तुम जानते हो हम सभी पढ़ रहे हैं। इसमें पहले 2 निशानी है बोक्सिंग की। वाप को बुलाया ही है पांचव बनने लिये। अगर क्रिमनल आई काम करती है तो खुद मी फैल करते होते। वावा को लिखते भी हैं बादा 15 इस सवेस्ट परे कम हैं। स्टुडेन्ट की बुधि में यह जस आता है हम फ्लाने सवेस्ट में वहुत 2 कम हूँ। कोई ऐसे भी समझते हैं हम फैल होगे। इसमें पहले नम्बर की सवेस्ट है पांचवता। वहुत लिखते हैं वादा हम ने हार ढा ली। तो इसको क्या कहेंगे। उनकी दिल में आती होगी अभी मैं तो चढ़ नहीं सकूँगा। तुम पांचव दुनिया बनाते हो ना।

ये राजालेस्ट ही यह है। वाप कहते हैं वच्चों नास्त-एकस्त याद की बाँग पांचव बनो तो इन(ल0ना0) के घराने में जा सकते हो। टीचर तो सन्धाने होते हैं। यह इतना ऊंच पद पा सक्ते वा नहीं। यह है एप्रोफ टीचर। यह दादा भी तो स्कूल पढ़ा हुआ है ना। कोई 2 छोकड़े भी ऐसे खाल काम करते हैं जो आदित्र प्रास्टर को उनको सजा देनी पड़ती है। आगे वहुत जोर से जारी देते थे। जब्तो सजा आदेकम कर री है तो स्टुडेन्ट और नो विगड़ते हैं। आजकल स्टुडेन्ट कितना हंगामा करते हैं गवर्नर्स्ट से। गवर्नर्स्ट स्टुडेन्ट के न्यू वर्ल्ड कहते हैं। यह देखो क्या करते हैं, आग लगा देते हैं। अपनी ज्वानी दिखाते हैं। यह है ही अल्प राज्य। ज्वान लड़के ही वहुत खाल होते हैं। ज्वान को ही आग लगी हुई होती है ज्वानी की। उनकी अंडे वहुत क्रिमनल होती है। ज्वाने में तो बड़े अच्छे आते हैं। जैस कहा जाता है ना ईश्वर का अन्त नहीं पाया जाता। तो इसमें भी अन्त नहीं पाया जाता। यह किस प्रकार का भनुष्य है। हां ज्ञान बुधि से पता पड़ता है। यह कैसा पढ़ता है, उनकी क्रिकिटी कैसी है। कोई तो वात करते हैं जैसे कि नुस्खे से फूल निकलते हैं। यह तो ऐसे वात करते हैं जैसे पत्थर निकलते हैं। देखो वहुत अच्छे, पांचन्ट आदेभी लिखते हैं पस्तु औ दोध। वाहर का शो। या वडी दुस्तर है इसालैये गायन है आरथर्डवत सुनान्त, अपन को क्रहलस्ट्री। लेहम शिव वादा के न्तान हैं, औरों को सुनावन्ति, क्यान्ति फिर भागने त अर्धांत ट्रैटर बनान्ति। ऐसे नहीं होशियार ट्रैटर नहीं बनने हैं अच्छे 2 होशियार भी ट्रैटर बन पड़ते हैं। उस सेना में भी ऐसे होता है। ऐसेपतेन सहित ही दूसरे इलाके में ले जाते हैं। यहां भी ऐसे होता है। स्थापना में वडी भेहनत लगती है। वच्चों से भी पढ़ाई में भेहनत, टीचर भी भी पढ़ाने में भेहनत होती है। देखा जाता है यह सभी अंडे इंडियन्स करते हैं, पढ़ते नहीं हैं तो दिल में रोता है इनको हन्टर भाना चाहें। स्कूल में हन्टर लगते हैं ना। यह तो दाप है। वाप कुछ भी नहीं कहते हैं। वाप के पास कानून नहीं है। यहां तो बिल्कुल ही शांत रहना होता है। वाप तो है सुख दाता प्यार का भगवा। तो वच्चों की चलन भी ऐसी होनी चाहें। जैसे कि देवताएं होते हैं। तुम वच्चों को वावा मदेद कहते हैं।

तुम पदमापदन भाग्यशाली हो। एन्टु पदमापदन दुर्मियशाली भी बनते हो। जो फैल होते हैं उन्हें तो क्रांग्यशाली हो कहेंगे ना। वादा जानते हैं अन्त तक यह होता रहता है। कोई न कोई फ्लान दुर्मियशाली भी नहीं बनते हैं। चलन ऐसी होती है जो समझा जाता है यह ठहर न लेंगे। इतना ऊंच बनने लायक नहीं है। अपनी सभाल चलो। यह भी हामा अन्तर होने का है ज्यायोंदी तो इतने दूधी का स्कूल भूत आ जाता है। मुह हो आभी नहाले आर हो लोंगे से भी बदतर बन जाते हैं। सो भी अंडे 2 फॉर्ट वलासवच्चे, वहुत हैं।

जो गुल्मि में आपके कवय को पत्र भी नहीं लिखते हैं। विचारों का कथा हील होगा। वापर तो ऐसे सम्भालते हैं। सर्व का सदगति दाता वापर है ना। वापर कहते हैं मैं आया हूँ सर्व का कल्पणा करने। अब सर्व की सदगति करता हूँ कल फिर दुगीत हो जाती है। तुम कहोगे कल हम दिश्व के मालिक हैं अच्छा गुलाम बन गये हैं। अभी सारा शाह तुम वच्चों की दुष्य मैल्लो यह बन्डरफुल शाह ने मनुष्यों को यह भी पता नहीं हैं यह शाह है, इनकी आद्यु किसनो है। शाह की आद्यु तो जस होनी चाहेहर ना इनको कहा ही जाता है कल्प-वृद्धा। जिसकी आद्यु सक कल्प है। कल्प मैं कितने वर्ष होते हैं यह किसको भी पता नहीं है। अभी तुम जानते हो कल्प भाना पैरे 5000 वर्षों। 5000 वर्ष का सम्युट शाह है। एक सेकंड का भी पर्क नहीं पड़ सकता। इस वैहद के धारों के नालेज अभी तुम वच्चों को भिल रही है। नालेज देने वाला है वृक्ष-पांत। वीज कितना छोटा होता है, उनसे फल टेहो कितना बड़ा नफलता है। यह फिर है बन्डरफुल शाह। इनका वीज बहुत छोटा है अर्था किसी छोटी है। वापर भी बहुत छोटा है। इन अंडों से देहा भी नहीं मलते। मल रामलोधी भा बतलाते हैं उसने यहाँ मैं रमलाण के आगे बैठा था तो एक जोल उनसे नकती और फैरे ते सभा गई। ऐसी कौई ज्योति निकल भर फिर गला फोड़े ही सकती है। क्या निकला? गुरु से ज्योति निकल भैरे मैं सनाई। अर्था किसी तो फिर शरीरा गिर पड़े। का चीज़ है यह सहते नहीं है। ऐसे 2 माह तो बहुत हो होते हैं। परन्तु यह लोग मान लेते हैं। फिर भी ना भी लिधाते हैं। भद्रामनुवाच कीई भी ननुष्य की भी नहीं है नहीं। नहीं भा है तो इन देवताओं को। और जो देवताओं को ऐसा बनाने वाला है। वावा ने काढ़ बहुत अच्छा भद्रामनुवाच था। जदौन्त जाना हो नी शिव वाचा की। इन (त०नाठ) को बनाने वाला भी शिव वाचा है ना। वापर एक ही है। उस एक को ही याद रखो। और किसको भी पता नहीं है। यह खुद कहते हैं ते ऊंच ते ऊंच बनता हूँ फिर नीचे ते नीचे गिरता भी हूँ। यह किसने भी पता नहीं है ऊंच ते ऊंच ल०नाठ ह। फिर १४ जन्मों वाद नीच ते नीच बनते हैं। तत त्वम् तुम भी विश्व के भाग्यक ये पितृया बन गये हो। सत्युग मैं कौन थे यहभी तुम जानते हो। तुम्हों ही सभी थे। नंदकलार पुस्त्यार्थ अनुवार। राजा रानी भी थे। सूर्यवंशी डिनायस्टी भी थी। चन्द्रवंशी डिनायस्टी भी थी। वाचा कितना अच्छी रीत समझाते हैं। यह सूर्योट चक्र का सारा ज्ञान तुम वच्चों की दुष्य चलती फिलहाल रहनी चाहेहर। तुम चैतन्य लक्ष्मी हाजा हो। राती पद्मार्दि दुष्य ते रहनी चाहेहर परन्तु वह अवस्था हुई नहीं है। तो ऐसे ही है। जो पास यिस आनंद होगे उनकी यह राती होगी। सारा ज्ञान दुष्य मैं होगा। वापर के लोडने नवतो वच्चे भी तब कहलावेगे। वापर स्वर्ग की रीत करते हैं ऐसे वच्चों पर। कहते हैं मैं राजार्दि नहीं, कला हूँ। तुमको देता हूँ। इसको निष्पान सेवा कहा जाता है। वच्चे जानते हैं वाचा हनुमों द्विर के ऊपर चढ़ते हैं। तो ऐसे वापर को कितना याद करना चाहेहर। यह भी इनाम बना हुआ है वापर संगम दुग पर ही आज्ञा सभी को सदगति देते हैं। नंदवार पुस्त्यार्थ अनुसार। नम्बरदन हाईस्ट विर्ट कुल पौदें। नम्बरलास्ट विल्कुल ही अप्रकृति अपवित्र। याद प्यार तो वापर सभी को देते हैं। वापर कितना अच्छी रीत समझाते हैं। कुछ भी छिद्या सहेकार न आना चाहिए। परन्तु भाया इतनी जवरदस्त है जो अकल ही चट कर देतो। देवता देवता भद्रामनुवाच। इतनी देवता कहते हैं लाल दार रहना है। यथा का भी रेगार्ड खेलनाहै। इस ददारा हो तुम्हों वापर तुम्हारे हैं ना। इसने तो कव गाली नहीं भाई थी। सभी प्यार करते थे। अभी तो देखो कितनी गाली जाई है। वच्चे हो ऐसे चतन चलते हैं जिस काला शिव वाचा को, और ब्रह्मा को भी गाली द्यानी एड़ती है। ट्रेटर बन भाग्यित हो जाते हैं। तो फिर उनकी गति कथा होगी। पेल होगे ना। वापर समझाते हैं भाया ऐसी है इसीलिये यहुत भद्रामनुवाच खेलते हैं। भाया किसको भी छोड़ती नहीं है। सभी प्रकार की आग लगा देती है। वापर कहते हैं ते तमो वच्चे काम चिक्षा पर चढ़ काले लैयते बन गये हैं। अभी वापर कहते हैं नुहे यादकरों तो तुम गोसा बन जाएंगे। सभी काम चिक्षा पर चढ़ विस्कुल ही काले कोपते बन गये हैं। ऐसे भी ननुष्य होते हैं जो दिन ते दो चर घर भी काम चिक्षा पर चढ़ते हैं। वेस्याएं तो सात दिन यहीं धंधा करती है। तो जरूर भाट भी होगे ना। एकदम काले कावले बन जल भरते हैं।